हैं । उनकी ऊँचाई कम होने के कारण वे ऐसे फलों को खाते हैं जो कि उनकी पहुंच में होते हैं । वे फलों के गुदा भाग को खाकर बाकी फेंक देते हैं । कंद को उबलाकर खाते है और यदा-कदा उसे भुनकर खाते हैं । शहद उनके भोजन का एक प्रमुख अवयव होता है । वे दो प्रकार के शहदों का प्रयोग करते हैं नामतः शहद के बड़े सफेद छत्तों और शहद के छोटे काले छत्तों से प्राप्त शहद । जारवा सीपियों, पक्षियों, और उनके अंडो, कछुओं और उनके अंडों, जंगली छिपकलियों को उबालकर तथा मछलियों को उबालकर या भूनकर खाते हैं । शूकर को मारकर उसकी आंतड़ियों को साफ करने के बाद ही उसे अपनी बस्ती ले जाते हैं । शूकर उनका सबसे प्रिय आहार होता हैं और वे उसे पकाकर या सेक कर खाते हैं ।

आमोद-प्रमोद

जारवा के आमोद-प्रमोद का मुख्य साधन नृत्य और गीत होता है । जरवा स्वयं अकेले ही गीत गाते हैं किन्तु उन्हें समूह गान से अधिक लगाव है । "ओले लो लो ओले लो" उनका सबसे प्रिय गीत है जो कि अफ्रीका की धुनों की याद दिलाता है । आजकल उनमें से कुछ तो हिन्दी गीत गाने लगे हैं और हिन्दी नृत्यों की नकल करने लगे हैं । इनमें सीखने की प्रतिभा इतनी विलक्षण होती हैं कि वे एक बार देखकर ही हिन्दी चलचित्र के नृत्यों की पुनरावृत्ति कर सकते हैं । वनों में रहने के कारण इनके शरीर में बला का लोच होता है और इस कारण उनके नृत्यों में सहजता का पुट होता है । बच्चे पेड़ों की शाखाओं में झुलकर, लुका-छिपी खेलकर, समुद्र में तैरकर या गोता लगाकर आनंद का अनुभव लेते हैं । युवा जारवा के शरीर इतने लचीले होते हैं कि वे अच्छी खासी दूरी तक हाथों के बल पर चल सकते हैं । आजकल वे आधुनिक समाज के सम्पर्क में आने के बाद फुटबॉल, क्रिकेट या बैडमिंटन जैसे खेलों में भी रूचि दिखाने लगे हैं ।

दसतकारी

जारवा उपयोग में लाई जाने वाली घरेलू सामग्रियाँ जैसे शहद रखने के लिए बरतन, जरवा बत्ती, बाल्टी, आदि बनाते हैं, किन्तु वे बांसों से धनुष-तीर, तार, वक्ष-कवच, झोपड़ी आदि बनाने में निपुण होते हैं । बांसों से निर्मित विविध प्रकार की सामग्रियों को बनाने के लिए वे विभिन्न प्रकार के बांसों और वृक्षों के छालों का उपयोग करते हैं । तीरों को नुकीला, धारदार और पैना बनाने के लिए तीर के शीर्ष भाग में लोहे को काटकर लगाते हैं । अपने तीरों को विभिन्न प्रकार के रंगों से सजाते हैं । तटों पर नाईलोन की रस्सियों की सहायता से जाल बुनते हैं जो कि मछली मारने के काम में आती है । पहले तो वे पत्थरों से चाकू बनाते थे, किन्तु बाद में वे सीप्पियों से चाकू बनाने लगे हैं ।

आवागमन के साधन

उनके शरीर के अंग ही उनके आवागमन के साधन हैं । बिना रूके 20 से 30 किलो मीटर की यात्रा करना या संकरी खाड़ियों या नालों में 2 से 3 किलोमीटर की दूरी को तैरकर पार करना उनके लिए कोई दुष्कर कार्य नहीं है । आठ दस सूखी लकड़ियों को थोड़ी-थोड़ी दूर पर रस्सी की सहायता से बांधकर उसे एक चौकार आकार दिया जाता है और उस पर सवार होकर वे एक द्वीप से दूसरी द्वीप की यात्रा करते थे । आधुनिक द्वीप के संपर्क में आने के बाद अंडमान तथा निकोबार प्रशासन ने उन्हे एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक जाने के लिए इंजिन चालित छोटी-छोटी नौकाएं मुहैया कराई हैं और सड़क मार्ग से यात्रा करने के लिए वे बस सेवा का सदुपयोग करने से भी नहीं चुकते हैं । उन्हे बस की छतों पर यात्रा करना अधिक सुखद लगता है ।

सामाजिक व्यवस्था

जारवा के समाज में संयुक्त परिवार की प्रथा है जिसमें माता, पिता, भाई, बहन, पति-पत्नी एक साथ रहते हैं । प्रत्येक जरावा समुदाय की अपनी अपनी परम्परा और रीति-रिवाज है । उनके समुदाय में एक पत्नी की प्रथा है । समाज में महिलाओं को उचित स्थान प्राप्त है और वे परिवार का अभिन्न अंग होती हैं । उनके समुदाय में पुत्र और पुत्री में कोई भेद नहीं होता है और न ही पुत्रियों की हत्या की जाती है । वे संतानों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को भली-भाँति निभाते हैं । यहाँ तक कि यदि किसी शिशु के माता-पिता की अकाल मौत हो जाती है तो उनका समुदाय सामूहिक रूप से उस शिशु का लालन-पालन करता है और उसे माता-पिता की कमी महसूस होने नहीं देता है । किन्तु कुंवारी या विधवा महिलाओं से उत्पन्न होने वाली नाजायज संतानों के मामले वे हिंसक हो जाते हैं और समुदाय उस शिशु को अंगीकार नहीं करता है । अधिकांश मामलों में ऐसे शिशुओं की हत्या कर दी जाती है ।

जारवा समुदाय में विवाह आयु 13 से 14 वर्ष की आयु में हो जाती है । भाई-बहन के विवाह करने पर पाबंदी है । उनके समुदाय में भी शादी से पूर्व सगाई की प्रथा है । शादी के अवसर पर दूल्हा और दुल्हन अपने-अपने शरीरों पर रंगों से चित्रकारी करते हुए सजाते हैं, पत्तियों, फूलों और जड़ी-बूटियों से बनी मालाएं पहनते हैं । दुल्हन दूल्हे की गोद में बैठकर शादी की विधि को सम्पन्न करती है । इनके यहाँ शादियाँ रात में होती हैं ।